अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल

समय : 3 घंटा | तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2016) | दिनांक 22.12.2016

चतुर्थ वर्ष : द्वितीय प्रश्नपत्र | पूर्णांक – 100

नव पदार्थ : आस्त्रव, संवर – 50

प्र.1 किन्हीं आठ प्रश्नों के उत्तर एक या दो लाईन में लिखें – 16

(आस्त्रव : किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर लिखें)

(क) प्रादोषिकी क्रिया आश्रव किसे कहते हैं?

(ख) उपेक्षा असंयम से क्या तात्पर्य है?

(ग) धर्म ध्यान व शुक्ल ध्यान किसे कहते हैं?

(घ) आभिनिवेशिक मिथ्यात्व से क्या तात्पर्य है?

(ड.) नो आगम भाव लाभ किसे कहते हैं?

(च) परिग्रह संज्ञा का क्या तात्पर्य है?

(छ) प्रतिक्रमण का क्या अर्थ है?

(ज) प्रात्यायिकी क्रिया आश्रव से आप क्या समझते हैं?

(संवर : किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें)

(झ) लोकानुप्रेक्षा से क्या तात्पर्य है?

(ञ) प्रज्ञा परीषह किसे कहते हैं?

(ट) निर्ग्रन्थ किसे कहते हैं?

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर व्याख्या सहित लिखें – 10

(क) आस्त्रव – मृत्यु के समय अंतःक्रिया किस जीव के होती है 'अथवा'क्या तीन योगों से भिन्न कार्मण योग है, और वही पांचवां आश्रव है? इस संदर्भ में आचार्य भिक्षु का अभिमत बताएँ।

(ख) संवर – संवर प्रवर्तक क्यों नहीं हो सकता? 'अथवा' क्या योग को छोड़कर शेष उन्नीस आश्रवों को जीव जब इच्छा हो तब छोड़ सकता है?

प्र.3 निम्न प्रश्नों के उत्तर विस्तार सहित लिखें – 24

(क) आस्त्रव – मिथ्यात्व आस्त्रव तथा योग आस्त्रव मोहनीय कर्म के उदय से निष्पन्न जीव परिणाम किस प्रकार है? 'अथवा' योग आस्त्रव में केवल मन वचन और काय के सावद्य योगों का ही समावेश होता है या निरवद्य योगों का भी होता है? आचार्य भिक्षु के मत को स्पष्ट करें।

(ख) संवर – परीषह किसे कहते हैं? बाईस परीषहों में से प्रथम बारह परीषहों का सविस्तार वर्णन करें। 'अथवा' संवर को परिभाषित करते हुए उसके प्रथम बारह भेदों का विवेचन करें।

अवबोध : मनुष्यगति से शील धर्म – 30

प्र.4 किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर एक या दो शब्द अथवा एक या दो लाईन में लिखें – 6

(क) साधारण वनस्पति के जीव इतने छोटे शरीर में अनंत जीव कैसे रहते होंगें?

(ख) सातों पृथ्वियां शाश्वत हैं या अशाश्वत?

(ग) तिरछी दिशाओं में नरक की पृथ्वियां लोकांत में नहीं गई हैं तो पांचवी व छठी नरक की पृथ्वियां कितने योजन अलोक के निकट हैं?

(घ) विपुलमति मनःपर्यवज्ञान किसे कहते हैं?

(ड) कौन से ज्ञान का किस दर्शन से संबंध है?
(च) जाति स्मृति कितने भवों की हो सकती है?
(छ) विसर्जन किसे कहते हैं?
(ज) क्या सम्यक्त्वी परित संसारी होता है?

प्र.5 किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर एक या दो लाईन में लिखें – 12

(क) अकर्म भूमि में कितने क्षेत्र हैं?
(ख) नरक से निकलकर जीव कहाँ–कहाँ जाता है?
(ग) श्रुतज्ञान व मनःपर्यवज्ञान के दर्शन क्यों नहीं?
(घ) क्या सम्यक्त्व चारों गतियों में होती है?
(ङ) ब्रह्मचर्य का पालन कौन सा भाव कौन सी आत्मा?
(च) क्या दान मात्र पुण्य का हेतु है?
(छ) एक भव की दृष्टि से जीव कितनी बार चारित्र को प्राप्त कर सकता है?
(ज) सम्यक्त्व की प्राप्ति कैसे होती है?

प्र.6 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें – 12

(क) छप्पन अन्तर्द्वीप कहाँ है?
(ख) सम्यक्त्वी मरकर कहाँ जाते हैं? तथा सम्यक्त्व प्राप्ति के पश्चात् जीव संसार में कब तक परिभ्रमण कर सकता है?
(ग) क्या साधुओं के भोजन करने में धर्म है? तथा अशुद्ध दान लेने वाले मुनि क्या दोष के भागीदार होते हैं?

श्रावक संबोध – 20

प्र.7 कोई चार पद्य लिखें – 12

(क) श्रावक को ग्यारह प्रतिमाएं क्यों धारण करनी चाहिए, उस पद्य को लिखें।
(ख) मद्दुक की प्रशंसा को वर्णित करने वाला पद्य लिखें
(ग) जिस पद्य में हर्बर्ट वारेन की गतिविधि का वर्णन है, उसे लिखें।
(घ) आर्य भिक्षु ने किस दिशा में कदम बढ़ाया है, वह पद्य लिखें।
(ड.) तप का दीप मन्द अथवा तीव्र जलना चाहिए, वह पद्य लिखें।
(च) जिस पद्य में तीन गुणव्रतों को दर्शाया गया है, उसे पद्य का रूप दें।

प्र.8 किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर एक या दो लाईन में लिखें – 8

(क) श्रावक जीवन की तीन विशेषताएँ कौनसी हैं?
(ख) श्रावक व अनुयायी इन दो शब्दों के क्या अर्थ होते हैं?
(ग) निर्लाछंनकर्म का क्या तात्पर्य है?
(घ) दुष्पक्व औषधिभक्षण का अर्थ लिखते हुए बताएँ कि ये श्रावक के लिए क्या–क्या है?
(ङ) तत्प्रतिरूपक व्यवहार का तात्पर्य बताते हुए बताएं कि यह किस व्रत के अंतर्गत आता है?
(च) ''बन्धो जीवस्य कर्मणः।
अन्योन्यानुगमात्मा तु यः सम्बन्धो द्वयोरपि।'' का भावार्थ लिखें।